ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 157-159

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

# आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल के साहित्य में लोक और वेद की अवधारणा

1. भानसिंह यादव
2. डॉ0 सरोज गुप्ता

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशिका– हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-31.01.2023, Revised-05.02.2023, Accepted-10.02.2023 E-mail: bhansinghyadavtkg1988@gmail.com

***सारांशः*** ***खण्ड 1– व्यक्तित्व/जीवन दर्शन– लोक और वेद के मर्मज्ञ, माँ पीताम्बरा पीठाधिश्वर के परम शिष्य आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल का जन्म बुन्देलखण्ड की पावन धरा पर स्थित ग्राम– विरगुआ (बुजुर्ग) जिला जालौन (उ.प्र.) में सन् 06 नबम्बर को हुआ।***

***आपके पिता पं. श्री मन्नूलाल संस्कृत के महान ज्ञाता, श्रीमद् भागवत कथाकार थे। आपकी माता श्रीमती पार्वती देवी माँ शक्ति की उपासक भगवती शारदा की अनन्य भक्त थी। देव तुल्य माता–पिता के आप द्वितीय पुत्र रत्न है। आपके अग्रज पं. कृष्णा लाल शास्त्री है आपकी धर्मपत्नि श्रीमती क्रांति शुक्ला ममतामयी एवं उदार हृदय वात्सल्य प्रेम की प्रतिमा थी।***

***कुंजीभूत शब्द– मर्मज्ञ, पीताम्बरा, पीठाधिश्वर, पावन धरा, महान ज्ञाता, श्रीमद् भागवत कथाकार, उपासक, अनन्य भक्त।***

**शिक्षा–दीक्षा–** बहुमुखी प्रतिभा के धनी और भाषा पर सबल अधिकार के कारण आचार्य शुक्ल जी साहित्य, धर्म, दर्शन, गणित, विज्ञान, बाल मनोविज्ञान, यंत्र–तंत्र एवं वास्तु शास्त्र साथ भारतीय वाङमय के अधिकांश क्षेत्रों में अध्ययन किया है। आचार्य जी ने विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु शा.डी.ए.वी.कॉलेज कानपुर आ गये और शा.डी.ए.वी. कॉलेज से बी.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की आपने स्नातकोत्तर संस्कृत, साहित्य में किया आपने एम.एड.साहित्य रत्न साहित्य आचार्य की उपाधि प्राप्त की आपके गुरू पीताम्बर पीठाधीश्वर राष्ट्र गुरू परमपूज्य स्वामी जी से आपने भारतीय साहित्य, संस्कृति, अध्यात्म एवं दर्शन तथा जीवन के परम ज्ञान एवं परम सत्य की शिक्षा प्राप्त की।

**जीवन–दर्शन–** आपने आजीविका के साधन के रूप में मानव जीवन का सर्वोच्च पद एवं समाज सुधार, जन हितेशी, परोपकार का पद चयन किया। शिक्षक पद पर आपकी प्रथम नियुक्ति सन् 1955 में विन्ध्यप्रदेश शासन के शा.उच्चतर माध्यमिक उन्नाव (वालाजी) दतिया में हुई।

शिक्षा में गुणात्मक सुधार करते हुये आप 6 नबम्वर 1990 को आप प्राचार्य स्कूल शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुये। आप शासकीय सेवानिवृत्त हुए परन्तु साहित्य सृजन, ज्ञान का दान, वेद–वेदान्त का अध्ययन, अध्यापन पत्रिकाओं का प्रकाशन, पुस्तको का लेखन, शोधार्थी छात्रों का मार्गदर्शन, लोक भाषा के ज्ञान का प्रकाश चारो ओर आज भी विर्कीण कर समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे है।

**द्वितीय–खण्ड साहित्य सृजन– रचना कार्य– आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल रचित पुस्तकें :–**

1. महर्षि अगस्त दृष्ट मंत्र भाष्य
2. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश
3. ऋषि हयग्रीव कृत शाक्त दर्शनम्
4. अगस्त कृत शक्ति सूत्रम्
5. बुन्देला भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन
6. ललित निबंध संग्रह
7. महर्षि अगस्त कुल के ऋषियों के मंत्रो का भाष्य
8. ब्रहावादिनी
9. महादेव
10. चतुर्दश विद्यायें और चौसठ कलायें: अन्तर्सम्बन्ध

**पत्र–पत्रिकायें–**

1. ओरछा टाइम्स साप्ताहिक पत्रिका में लेख प्रकाशित हुये
2. कल्याण
3. पंचेष्वर
4. तृणगन्धा

**समाचार पत्र–**

1. जागरण दैनिक समाचार में प्रकाशित

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

2. मध्यप्रदेश संदेश में प्रकाशित
3. आकाशवाणी केन्द्रो के माध्यम से विभिन्न विषयों पर विचारो को प्रक्षेपित करते रहे।
4. वेद अध्ययन, वैदिक शोध तथा उत्तर भारत के प्रमुख शहरों में वैदिक गणित के प्रोफेसर के. नरेन्द्रपुरी के साथ व्याख्यान और प्रशीक्षण कार्य

**पुरूस्कार एवं सम्मान–**

1. महर्षि अगस्त्य अलंकरण 2014
2. संस्कृतज्ञ सम्मान 2015
3. स्वामी विष्णुतीर्थ आध्यात्मिक ग्रंथ सम्मान 2016
4. तुलसी मानस प्रतिष्ठान भोपाल 2019 से सम्मानित

**तृतीय खण्ड–** आचार्य शुक्ल जी के साहित्य में लोक और वेद

**लोक साहित्य–** लोक अर्थात् जन सामान्य और साहित्य अर्थात् उस जन सामान्य के भावनाओं की अभिव्यक्ति। लोक साहित्य किसी भी समाज, वर्ग या समूह के सामूहिक जीवन का दर्पण होता है। इसमें सामूहिक चेतना, अनुभवों, संवेदनाओं की अभिव्यक्ति रहती है।

किसी भी समाज का इतिहास और संस्कृति लोक साहित्य में उपलब्ध होती है। लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक कर्ता है लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना की मानव, इसलिए उसमें सम्पूर्ण जन–जीवन अवस्था, प्रत्येक समय, प्रकृति सभी समाहित है।

**धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार–** "वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है, जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढी हो पर आज इसे सामान्य लोक समूह अपनी ही मानता है। इससे लोक मानस प्रतिबिम्बित रहता है।"

इस प्रकार लोक साहित्य, लोक चेतना, लोक मानस और लोक संस्कृति का साहित्य है यह सहज, सरल, आडम्बर सहित साहित्य है।

वेद– वेद शब्द "विद्" धातु से निश्पन्न है जिसका अर्थ है ज्ञान, विचार, सत्ता एवं लाभ "ज्ञान" का ही दूसरा नाम वेद है यह वह ज्ञान है जो ब्रह्माण्ड के बिशय में सभी विचारों का स्त्रोत है, जो सदा अस्तित्व में रहता है और जो सभी कालो में मनुष्य को उपयोगी वस्तुओं के प्राप्ती और उसके उपयोग के उपाय बताता है। वेदों का आविर्भाव वेद ऋषियों द्वारा दृष्ट मंत्रो का संग्रह है। यह बहुत विशाल है वेद चार है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अर्थववेद। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार चारो वेद परमेश्वर से प्रकट हुये है।

**लोक साहित्य में वेदो के शब्दार्थ और उनकी महत्वता–** लोक भाषा अर्थात जनसामान्य के सबसे प्रिय अर्थग्राही भाषा में हमारे ज्ञान के सागर वेदो से अर्थ ग्रहण किया है वेदो के गूढ शब्द और उनके अर्थ को लोक भाषा में ग्रहण कर जन सामान्य क्षेत्रिय स्तर पर जीवन के सम्पूर्ण ज्ञान, संस्कृति के स्थायित्व, अधयात्म, सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक, चरित्र के साथ सम्पूर्ण जीवन की यथार्थता को प्रदर्शित किया है।

**बुन्देली बोली और वेद–** बुन्देली शब्दो का वर्तमान स्वरूप एवं उसके वैदिक एवं शास्त्रीय उद्भव से वर्तमान काल की यात्रा में शब्द पर भाषा वैज्ञानिक के प्रभाव एवं परिवर्तन का स्वरूप है। बुन्देला शब्दो का व्युत्पत्ति कोश किसी भाषा को समृद्धि उसके शब्द सामर्थ्य की विपुलिता पर परिगणित होती इसमें शब्द कोश की निर्मित्त अतिआवश्यक है। बुन्देली शब्दो का व्युत्पत्ति कोश आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल द्वारा प्रणीत बुन्देली शब्दो का व्युत्पत्ति कोश वृहदाकार ग्रंथ है। जिसके 485 पृष्टो में 1500 बुन्देली शब्दो को संजोया गया है।

इनमें ध्वनि, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, लोक रीति तथा संख्यावाची शब्दों को उनके विन्यास एवं उत्पत्ति आदि विवरण के साथ क्रमबद्ध किया गया है।

**व्युत्पत्ति के आधार –पाणिनी यास्क–**

शब्दों का विवरण आचार्य शुक्ल जी ने अपने व्युत्पत्ति कोश के शब्दो का वर्गीकरण इस प्रकार किया है:–

**1.एकार्थी–** एक अर्थ वाले शब्द–

**उदाहरण–** अकौआ यह एकार्थी शब्द है।

हिन्दी अर्थ आक, व्युत्पत्ति कारण यह अर्थ धातु से निर्मित है जो पाणिनी के अनुसार अर्चपूजायम पर आधरित है। किन्तु इसी अर्क शब्द की उत्पत्ति यास्क मुनी ने देव, अन्न और वृक्ष कहा है।

**विशेष–**

1. आचार्य शुक्ल जी ने अकौआ को बुन्देलखण्ड में शिवपूजन में अर्जित हेतुक को जोडकर इसके क्षेत्रीय महत्व को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

प्रतिस्थापित किया है।

**द्विअर्थी एक ही शब्द के दो रूप–** द्विअर्थी शब्दों में इमली के अम्लिका व अम्लीका दो रूप इमली के दो रूप सुश्रुव संहिता में दिये गये है। इमली वास्तव में वृक्ष व फल दो रूपों में प्रयुक्त हुए है।

बहुअर्थी एक शब्द अनेक रूप अनेकार्थी शब्दों में अटकवौं, आसन, आसरो, इमरत एक ऐंठवों, कन्या, गोट पतुरिया, विगना, लखवौ, लगवौ, सेंधा आदि कोश में दिये गये हैं, इसमें एक शब्द अटकंवो, 1. अटकवो, 2. अटकावो 3. अटक और अटकट संज्ञा रूप दिये गये है जो एक ही शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं।

**चतुर्थ खण्ड– दार्शनिक एंव आध्यात्मिक–** आचार्य पं. दुर्गाचरण जी के द्वारा रचित ग्रंथो में धर्म तथा दर्शन का वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है। श्री शुक्ल जी द्वारा रचित ग्रंथ इस प्रकार है:–

**1. महर्षि अगस्त दृष्ट ऋग्वेद मंत्र भाष्य–** इस ग्रंथ की रचना के पीछे श्री शुक्ल जी का उद्देश्य रहा है कि एक ऐसे ऋषि को प्रकाश में लाना जो कि ऋचा दृष्टा के साथ ही अपने हृदय में उनको आत्मसाक्षात किये हुये थे। अगस्त्य ऋषि के ऋचाओं की संज्ञा वेद भाष्य कारो के परिपेक्ष्य में की जो इनके महत्व, रहस्य को प्रकाशित करना चाहते थे, ऋग्वेद में महर्षि अगस्त के मंत्रो का भाष्य जो कि सूक्त क्रमांक 165 से 191 तक है।

**2. ऋर्षि हयग्रीवकृत, शाक्त दर्शनम् एंव अगस्त्य कृत शक्ति सूत्रम–** इस ग्रंथ में शैव अद्वैत सिद्धान्त की दृष्टि से इन शाक्त ग्रंथो के शक्ति सूत्रों की व्याख्या की है। तथा दोनो ग्रन्थो की विशेषताओं को दृष्टिगत कराया गया है। सिद्ध किया गया है कि शक्त दर्शन एवं शक्ति तंत्र दोनो ही ग्रंथ कश्मीर क्रम दर्शन के सिद्धान्तों से प्रभावित उत्कृष्ट शाक्त तंत्र ग्रंथ है।

**3. महादेव–** इस ग्रंथ में भारत भूमि में विद्यामान शिव की शक्ति व भारतीय संस्कृति की जडो में विद्यमान शिव महिमा का अद्भुत बर्णन किया है। शिव की विभिन्न मुद्राओं एवं आयुधों के निहितार्थ पर रचित पुस्तक अत्यन्त श्रेष्ठ शिव विषयक समग्र जानकारियों से परिपूर्ण है।

अतः यह पुस्तक भगवान, आदितोष जो अनादि, अजन्मा, अजर, अमर भोलेनाथ, स्वम्भू शिव की महिमा, गरिमा से आपूरित है।

**4. चतुर्दश विद्यायें और चौंसठ कलायें–**

**अंतर्सम्बंध–** इस पुस्तक में चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

**छः बेदांग–** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छनद, न्योतिष

**चार उपांग–** पुराण, मीमांसा, तर्कशास्त्र तथा बैशेषिक इन चौदह विद्याओं को भारतीय बांग्मय में प्रमाणित रूप से अंगीकृत किया है।

**उपसंहार–** लोक विज्ञान और वेदविद्या पर समान रूप से गहन शोध परक गंभीर गवेष्णात्मक ज्ञान में पारंगत एवं अध्येता आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल जी बुन्देली भाषा साहित्य के सूर्य है। आधुनिक युग में भारतीय वैदिक सनातन परम्परा को जन सामान्य में पहुँचाने में आप दिग्दर्शक है। वाक्देवी मॉ सरस्वती की कृपा उन पर सदैव रही है। पुरातन सामग्री विरासत को आपने सुव्यवस्थित कर सह सरल रूप से व्यक्त कर मानवता की सेवा की है। जन–जन का हित किया है आपका ऐसा व्यक्तित्व कृतित्व है जो लोक व शास्त्र दोनो पर ही अपनी लेखनी चलाने में निपुण है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋषि हदग्रीव कृत शाक्तदर्शनम् एवं अगस्त्यकृत शक्तिसूत्रम् आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
2. महर्षि अगस्त्य दृष्ट ऋग्वेद मंत्र भाष्य आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन।
3. लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल के लोके च वेदे च, डॉ सरोज गुप्ता, पं. अरूण कुमार शुक्ल, जे.टी.एस.पब्लिकेशंस दिल्ली।
4. महादेव आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रकाशन।
5. मदन रस बरसें बुन्देली ललित निबंध आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रकाशन।
6. बुन्देली गाथा डॉ. दुर्गेश दीक्षित आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रकाशन।

*****